इकाई–2 काव्य बोध

(1) काव्य की परिभाषा एवं भेद– (प्रबंध काव्य के भेद)

प्रश्न 1. कविता किसे कहते हैं? परिभाषा दीजिए।

उत्तर– ''रसयुक्त वाक्य ही काव्य है।'' –आचार्य विश्वनाथ। **(2022)**

''रमणीय अर्थ के प्रतिपादक धर्म को काव्य कहते हैं।''

–पंडितराज जगन्नाथ

''हृदय की मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती है, उसे काव्य कहते हैं।

– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

प्रश्न 2. काव्य के भेद बताइए।

उत्तर– काव्य के मुख्यतः दो भेद हैं– (1) श्रव्य काव्य और, (2)दृश्य काव्य।

(1) श्रव्य काव्य– जिस काव्य रचना को हम सुनकर रसास्वादन करते हैं, उसे 'श्रव्य काव्य' कहते हैं।

(2) दृश्य काव्य– जिस काव्य रचना को आँखों से देखकर और कानों से सुनकर आनन्द का अनुभव करते हैं, उसे दृश्य काव्य कहते हैं।

प्रश्न 3. शैली की दृष्टि से काव्य के भेद लिखिए।

उत्तर– शैली की दृष्टि से काव्य के दो भेद होते हैं– (1) प्रबंध काव्य और (2) मुक्तक काव्य।

प्रश्न 4. प्रबंध काव्य किसे कहते हैं? भेद बताइए।

उत्तर– किसी कथा सूत्र को आधार बनाकर की गई क्रमबद्ध तथा सुगठित काव्य रचना को 'प्रबंध काव्य' कहते हैं।

प्रबंध काव्य के तीन भेद होते हैं– (1) महाकाव्य, (2) खण्ड काव्य और (3) आख्यानक गीतिका।

प्रश्न 5. मुक्तक काव्य किसे कहते हैं? प्रकार बताइए।

उत्तर– पूर्वा पर संबंध से मुक्त तथा अपने आप में पूर्ण लघु काव्य रचना को 'मुक्तक काव्य' कहते हैं। मुक्त काव्य के दो प्रकार होते हैं– (1) पाठ्य मुक्तक और (2) गेय मुक्तक।

प्रश्न 6. खण्ड काव्य किसे कहते हैं? विशेषताएँ लिखिए। **(2023)**

उत्तर– खण्ड काव्य की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं–

(1) खण्ड काव्य में जीवन के किसी एक भाग, एक घटना या एक चरित्र का चित्रण होता है।

(2) इसमें पात्रों की संख्या सीमित रहती है।

(3) इसमें केवल एक ही प्रकार का छन्द प्रयुक्त होता है।

(4) इसकी भाषा शैली सरल एवं प्रवाहपूर्ण होती है।

(5) यह अपने आप में एक पूर्ण रचना होती है।

प्रश्न 7. महाकाव्य की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर– महाकाव्य की प्रमुख विशेषताएँ निम्नानुसार होती हैं-

(1) महाकाव्य की कथा इतिहास प्रसिद्ध होती है।

(2) इसका नयक उदत्त चरित्र वाला होता है।

(3) इसमें मानव जीवन की विशद् व्याख्या होती है।

(4) इसमें कम से कम आठ सर्ग होते हैं।

(5) इसमें श्रृंगार, वीर और शांत में से कोई एक रस प्रधान और शेष रस गौण रहते हैं।

(6) इसकी भाषा शैली उदात्त होती है।

(7) मूलकथा के साथ-साथ अन्य सहायक कथनाक भी आदि से अन्त तक आते जाते रहते हैं।

प्रश्न 8. हिन्दी के चार खण्ड काव्यों के नाम लिखिए।

उत्तर– (1) पंचवटी, (2) जयद्रथ वध, (3) सुदामा-चरित्र, (4) हल्दी घाटी का युद्ध।

प्रश्न 9. हिन्दी के मुख्य महाकाव्यों एवं उनकी रचना करने वालों के नाम लिखिए

उत्तर–

	महाकाव्यों के नाम	रचयिता का नाम
(1)	रामचरित-मानस	तुलसीदास
(2)	पद्मावत	मलिक मोहम्मद जायसी
(3)	साकेत	मैथिलीशरण गुप्त
(4)	कामायनी	जयशंकर प्रसाद
(5)	लोकायतन	सुमित्रानंदन पंत

प्रश्न 10. महाकाव्य और खण्ड काव्य में अंतर बताइए।

(लो.प्र.वैं.) (2022)

उत्तर– महाकाव्य और खण्ड काव्य में निम्नानुसार अंतर है-

महाकाव्य	खण्डकाव्य
(1) महाकाव्य की कथा वस्तु विस्तृत होती है।	(1) खण्ड काव्य की कथा वस्तु सीमित होती है।
(2) महाकाव्य में अनेक पात्र होते हैं।	(2) खण्ड काव्य में पात्र सीमित होते हैं।
(3) महाकाव्य में सभी रसों का समावेश होता है।	(3) खण्ड काव्य सभी रसों का समावेश नहीं होता है।
(4) महाकाव्य में आठ से अधिक सर्ग होते हैं।	(4) खण्ड काव्य में सर्गों की संख्या कम रहती है।
(5) महाकाव्य में अनेक छन्दों का प्रयोग होता है।	(5) खण्ड काव्य में एक ही प्रकार के छन्द का प्रयोग होता है।
(6) महाकाव्य की भाषा-शैली उदात्त होती है।	(6) खण्डकाव्य की भाषा-शैली सामान्य रहती है।

2. रस

प्रश्न 1. रस किसे कहते हैं? परिभाषा लिखिए।

उत्तर– रस काव्य की आत्मा है। इसे 'ब्रह्मानंद सहोदर' कहते हैं। वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' साहित्य शास्त्र में रस का अर्थ है- अलौकिक या लोकोत्तर आनंद।

परिभाषा– किसी काव्य को पढ़ने, सुनने अथवा देखने में श्रोता, पाठक या दर्शक को जो आनंद की अनुभूति होती है, उसे रस कहते हैं।

प्रश्न 2. रस के अंगों के नाम लिखिए।

उत्तर– रस के चार अंग होते हैं- (1) स्थायी भाव, (2) विभाव, (3) अनुभाव, (4) संचारी भाव।

1. स्थायी भाव– सहृदय के हृदय में जो भाव स्थायी रूप से विद्यमान रहते हैं, उन्हें 'स्थायी भाव' कहते हैं।

2. विभाव– स्थायी भाव की उत्पत्ति के कारणों को 'विभाव' कहते हैं। इसके दो भेद होते हैं- (अ) आलंबन विभाव, (ब) उद्दीपन विभाव।

3. अनुभाव– स्थायी भाव के जाग्रत होने के बाद आश्रय की शारीरिक व मानसिक चेष्टाओं को 'अनुभाव' कहते हैं। जैसे- भय उत्पन्न होने पर काँपना या पसीना आना आदि।

4. संचारी भाव– संचरण करने वाले मनोविकारों को 'संचारी भाव' कहते हैं। इनकी संख्या 33 मानी गई है। ये एक रस में एक साथ कई बार आते हैं और पुनः लुप्त हो जाते हैं।

प्रश्न 3. स्थाई भाव सहित रसों की संख्या बताइए।

उत्तर– स्थाई भाव सहित रसों की संख्या नौ है। कुछ आचार्य वात्सल्य को दसवाँ रस मानते हैं। इस प्रकार दस रसों के दस स्थाई भाव हैं-

क्रम	रस	स्थाई भाव
1.	श्रृंगार	रति या प्रेम
2.	हास्य	हास या हँसी
3.	करुण	शोक
4.	रौद्र	क्रोध
5.	वीर	उत्साह
6.	भयानक	भय
7.	वीभत्स	घृणा या जुगुप्सा
8.	अद्भुत	विस्मय, आश्चर्य
9.	शांत	निर्वेद या वैराग्य
10.	वात्सल्य	स्नेह

प्रश्न 4. श्रृंगार रस के लक्षण बताकर उदाहण दीजिए।

उत्तर– लक्षण– काव्य में जहाँ स्त्री-पुरुष या नायिका-नायक के परस्पर मिलन या अनुराग का वर्णन किया गया हो, वहाँ 'श्रृंगार रस' होता है। श्रृंगार रस का स्थाई भाव रति या प्रेम है।

श्रृंगार रस के दो भेद हैं- (1) संयोग श्रृंगार और (2) वियोग श्रृंगार।

1. संयोग श्रृंगार- इसमें स्त्री-पुरुष के संयोग का वर्णन होता है। जैसे- ''दुलहिन गावहु मंगलाचार, हमरे घर आए हैं राजा राम भरतार।''

2. वियोग श्रृंगार- इसमें स्त्री-पुरुष के वियोग की स्थिति का वर्णन होता है। जैसे- 'मैं अबला बाल वियोगिनी कुछ तो दया विचारो।''

प्रश्न 5. हास्य रस किसे कहते हैं?

उत्तर- हास्य रस- काव्य में जहाँ किसी व्यक्ति की वेशभूषा, आकृति, चेष्टा तथा विकृत वाणी को देखकर या सुनकर हँसी उत्पन्न हो, वहाँ 'हास्य रस' होता है। इस रस का स्थायी भाव 'हास या हँसी' है।

जैसे- ''कहा बन्दरिया ने बन्दर से, चलो नहाएँ गंगा।
बच्चों को घर पर छोड़ेंगे, होने दो हुड़दंगा।''

प्रश्न 6. वीर रस की परिभाषा सोदाहरण दीजिए।

उत्तर- वीर रस- काव्य में जहाँ ओजस्वी बातों का वर्णन हो, वहाँ 'वीर रस' होता है। इसका स्थाई भाव उत्साह है।

जैसे- ''तूफानों की ओर घुमा दो नाविक निज पतवार, आज हृदय में और सिंधु में साथ उठा है ज्वार।''

प्रश्न 7. शांत रस की परिभाषा दीजिए।

उत्तर- शांत रस- काव्य में जहाँ वैराग्यपूर्ण विषय का वर्णन हो, वहाँ शांत रस की व्यंजना होती है। इसका स्थाई भाव वैराग्य या निर्वेद है।

जैसे- ''मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट, ममेरो पति सोई।।''

प्रश्न 8. वात्सल्य रस की सोदाहरण परिभाषा दीजिए।

उत्तर- वात्सल्य रस- काव्य में जहाँ बच्चों की आनंदमयी क्रीड़ाओं का वर्णन हो, वहाँ वात्सल्य रस होता है। जैसे- ''संदेसो देवकी सो कहियो। हौं तो धाय तिहारे सुतकी, कृपा करत ही रहियो।''

3. छन्द

प्रश्न 1. छन्द किसे कहते हैं? छन्द के प्रकार बताइए।

उत्तर- छन्द को वृत्त या पिंगल भी कहते हैं। छन्द वह रचना है, जो वर्ण, मात्रा आदि की संख्या से नियमित होती है। दूसरे शब्दों में, लय, गति, मात्राओं या वर्णों पर आधारित रचना को 'छन्द' कहते हैं।

छन्द तीन प्रकार के होते हैं- (1) मात्रिक छन्द, (2) वर्णिक छन्द और (3) मुक्त छन्द।

1. मात्रिक छन्द- ये छन्द मात्रा की गणना पर आधारित होते हैं।

2. वर्णिक छन्द- ये छन्द वर्णों की गणना या संख्या पर आधारित होते हैं।

3. मुक्त छन्द- ये छन्द मात्रा और वर्ण की गणना से मुक्त होते हैं।

प्रश्न 2. गीतिका छन्द के लक्षण व उदाहरण लिखिए। **(2022)**

उत्तर- गीतिका छन्द- यह मात्रिक समछन्द है। इसमें चार चरण होते हैं। इस छन्द के प्रत्येक चरण में 14 तथा 12 की यति पर 26 मात्राएँ होती हैं। अन्त में लघु गुरु वर्ण होते हैं।

जैसे- ''हे प्रभो! आनंददाता, ज्ञान हमको दीजिए।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हम से कीजिए।
लीजिए हमको शरण में, हम सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी, धर्मरक्षक, वीर व्रतधारी बनें।''

प्रश्न 3. हरिगीतिका छन्द के लक्षण बताकर उदाहरण दीजिए। **(लो.प्र.वैं.)**

उत्तर- हरिगीतिका छन्द- इस छन्द के प्रत्येक चरण में 16 तथा 12 के विराम से 28 मात्राएँ होती हैं। अंत में लघु गुरु वर्ण होते हैं!

जैसे- ''संसार की समरस्थली में, वीरता धारण करो,
चलते हुए निज इष्ट पथ पर, सकंटों से मत डरो।''

प्रश्न 4. चौपाई छन्द की सोदाहरण परिभाषा लिखिए। **(2023)**

उत्तर- चौपाई छन्द- चौपाई छन्द के प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं। अन्त में गुरु वर्णन होते हैं।

जैसे- ''रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्राण जाई पर बचन न जाई।''

प्रश्न 5. दोहा छन्द का लक्षण बताकर उदाहरण दीजिए।

उत्तर- दोहा छन्द- दोहा छन्द के पहले और तीसरे चरण में 13-13 तथा चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं। अन्त में गुरु लघु वर्ण होते हैं।

जैसे- (1) '' क्षमा बड़न को चाहिए, छोटन को उत्पाद।।''
(2) ''रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती मानस चून।''

प्रश्न 6. रोल छन्द का लक्षण बताते हुए उदाहरण लिखिए।

उत्तर- रोला छन्द- इस छन्द के प्रत्येक चरण में 11 तथा 13 मात्राओं की यति पर 24 मात्राएँ होती हैं। अन्त में दो गुरु वर्ण होते हैं।

जैसे- ''हे देवी, यह नियम, सृष्टि में सदा अटल है,
रह सकता है वही सुरक्षित, जिसमें बल है।
निर्बल का है नहीं, जगत् में कहीं ठिकाना,
रक्षा साधन उसे, प्राप्त हो चाहे नाना।''

प्रश्न 7. उल्लाला छन्द-

उत्तर- उल्लाला छन्द के पहले तथा चीसरे चरण में 15-15 और दूसरे तथा चौथे चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं। प्रत्येक पंक्ति में 28 मात्राएँ होती है।

जैसे- हे शरणदायिनी देवि, तू करती सबका त्राण है।
प्रत्येक पंक्ति में 28 मात्राएँ होती हैं।
हे मातृभूमि, संतान हम, तू जननी, तू प्राण है।''

प्रश्न 8. कुण्डलिया छन्द किसे कहते हैं? उदाहरण दीजिए।
उत्तर– एक दोहा व एक रोला छन्द के मिलने से कुण्डलिया छन्द बनता है। इमसें छह चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं। दोहे के प्रथम व तृतीय चरण में 13-13 और द्वितीय व चुतर्थ चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं। रोले के प्रथम व तृतीय चरण में 11-11 और द्वितीय व चतुर्थ चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं। प्रत्येक पंक्ति में 24 मात्राएँ होती है। अन्त में दो गुरु वर्ण होते हैं। कुण्डलिया छन्द का प्रारम्भ व अन्त एक शब्द से होता है।

4 अलंकार

प्रश्न 1. अलंकार किसे कहते हैं?
उत्तर– काव्य के शोभाकारी धर्मों को 'अलंकार' कहते हैं। जो काव्य के शब्द और अर्थ में वृद्धि करें, उन्हें 'अलंकार' कहते हैं।
प्रश्न 2. अलंकार के भेद बताइए।
उत्तर– अलंकार के दो भेद हैं- (1) शब्दालंकार, (2) अर्थालंकार।
1. शब्दालंकर– जहाँ पर काव्य में शब्द संबंधी सौन्दर्य या चमत्कार हो, वहाँ पर 'शब्दालंकार' होता है।
2. अर्थालंकार– जहाँ पर काव्य में अर्थ संबंधी सौन्दर्य या चमत्कार हो, वहाँ 'अर्थालंकार' होता है।
प्रश्न 3. उपमा अलंकार की परिभाषा और उदाहरण लिखिए। **(लो.प्र.बैं.)**
उत्तर– उपमा अलंकार– काव्य में जहाँ पर उपमेय के साथ उपमान की किसी समान धर्म को लेकर तुलना की जाए, वहाँ 'उपमा अलंकार' होता है।
जैसे- (1) सन्त हृदय नवनीत समाना।
(2) मातृभूमि-सी सुखद।
प्रश्न 4. रूपक अलंकार की परिभाषा लिखिए।
उत्तर– रूपक अलंकार– काव्य में जहाँ पर उपमेय और अपमान में एकरूपता आ जाए, वहाँ पर 'रूपक अलंकार' होता है।
जैसे- (1) अम्बर-पनघट को डुबो रही, तारा-घट उषा-नागरी।
(2) चरण-सरोज पखारन लगा।
प्रश्न 5. यमक अलंकार की परिभाषा सोदाहरण दीजिए।
उत्तर– काव्य में जहाँ पर शब्दों या वाक्यांशों की आवृत्ति हो, किन्तु उनके अर्थ में भिन्नता हो, वहाँ पर 'यमक अलंकार' होता है।
जैसे- (1) ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहनवारी,
ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहाती है।
(2) घड़ी गुम गई, लगी उसी के साथ।
चैन भी जाती रही, उसी घड़ी के साथ।।
प्रश्न 6. उत्प्रेक्षा अलंकार की परिभाषा दीजिए।
उत्तर– काव्य में जहाँ पर उपमेय में उपमान की संभावना व्यक्त की जाए याक कल्पना की जाए, वहाँ पर 'उत्प्रेक्षा अलंकार' होता है। इसमें जनु, जानो, मनु, मानो आदि वाचक शब्दों का प्रयोग होता है।
जैसे– (1) मानो तरू भी झूम रहे हैं, मन्द पवन के झोंकों से।
(2) मानहु 'सूर' काढ़ि डारी हैं, वारि मध्य तैं मीन।
(3 हिम के कणों से पूर्ण, मानो हो गए पंकज नए।
प्रश्न 7. श्लेष अलंकार की परिभाषा और उदाहरण लिखिए।
उत्तर– काव्य में जहाँ पर किसी शब्द के दो या दो से अधिक अर्थ निकलें, वहाँ पर 'श्लेष अलंकार' होता है।
जैसे- (1) रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती मानस चून।
(2) घड़ी गुम गई, लगी किसी के हाथ।
चैन भी जाती रही, उसी घड़ी के साथ।।
प्रश्न 8. पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार की परिभाषा दीजिए।
उत्तर– काव्य में जहाँ पर किसी शब्द की पुनरुक्ति या आवृत्ति हो, वहाँ पर 'पुनरुक्ति प्रकाश' अलंकार होता है।
प्रश्न 9. अतिशयोक्ति अलंकार की परिभाषा लिखिए। **(2022)**
उत्तर– काव्य में जहाँ पर किसी विषय का बढ़ा-चढ़ाकर या अतिशय कथन किया जाए, वहाँ पर 'अतिशयोक्ति अलंकार' होता है।
जैसे- (1) हनुमान की पूँछ में, लगन न पाई आग।
लंका सिगरी जल गई, गए निसाचर भाग।।
(2) देखो दो-दो मेघ बरसते, मैं प्यासी की प्यासी।
प्रश्न 10. अन्योक्ति अलंकार की सोदाहरण परिभाषा लिखिए। **(2023)**
उत्तर– काव्य में जहाँ पर अप्रस्तुत कथन के द्वारा प्रस्तुत का बोध हो, वहाँ पर 'अन्योक्ति अलंकार' होता है।
जैसे- माली आवत देखकर, कलियन करी पुकार।
फूले-पूले चुन लिए, काल्हि हमारी बार।।
प्रश्न 11. मानवीयकरण अलंकार की परिभाषा दीजिए।
उत्तर– काव्य में जहाँ पर निर्जीव वस्तु या पदार्थ को सजीव के रूप में प्रस्तुत किया जाए, वहाँ पर 'मानवीयकरण अलंकार' होता है।
जैसे- (1) अँधेरी रात चुपचुप आँसू बहा रही थी।
(2) बंद नहीं अब भी चलते हैं, नियति नदी के कार्यकलाप।
प्रश्न 12. अनुप्रास अलंकार की परिभाषा लिखिए।
उत्तर– काव्य में जहाँ कोई वर्ण बार-बार प्रयोग में आए या किसी वर्ण की आवृत्ति हो, वहाँ 'अनुप्रास अलंकार' होता है।
जैसे- (1) रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम।
(2) जुग-जुग जियो जवाहर लाल।
(3) तरनि तनुजा तट तरुवर बहु छाये।